

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

२६/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरुजी को नमस्ते। परमात्मा गुरुजी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपनी मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाएं... देखिए आपका मूलस्वरूप... यही आप आत्मा का सत्य स्वरूप है... अनुभव कीजिए... अपने सत्य स्वरूप को देखते जाइए... अगले दस सेकंड के लिए अपना मूलस्वरूप देखने का अभ्यास करें... सभी अपना मूलस्वरूप स्पष्टता से देखें... हर कोई अपने मूलस्वरूप का गहराई से अनुभव करे...

यही समय है जो हर कोई अपने मूलस्वरूप को अनुभव कर सकता है। यही यह संगम युग है, जहां पर हर आत्मा को अपने हर कर्मों में अपने मूलस्वरूप को सदैव जागृत रखना होगा। सिर्फ मूलस्वरूप देखने से यात्रा पूरी नहीं होगी। मूलस्वरूप स्थिति में रहकर हर कर्म करने का पक्का संस्कार बनाना होगा। जितना आप आपको अपनी सत्य स्वरूप, मूलस्वरूप अवस्था को देखते जाएंगे, अनुभव करते जाएंगे, उतना आपका ही मूलस्वरूप पक्का होता जाएगा।

अगर आत्माएं सच में अपना कल्याण करना चाहती है तो सबसे पहले आत्माओं को क्या करना होगा? हर कोई कुछ क्षण के लिए इस पर अभी विचार करे, अगर सच में आप आत्माएं आपका कल्याण चाहती हो, तो इस संगम युग में आपको क्या करना होगा? सभी इस पर विचार अवश्य करें। क्या हर किसी ने सोचा है? क्या हर किसी के पास अपने उत्तर है? क्या हर किसी को पता है कि आपका कल्याण कैसे होगा? सिर्फ चलते रहने से ज्ञान मार्ग में, क्या इसमें आपका कल्याण होगा? ज्ञान और समझ, ये एक पहला पड़ाव है कल्याण की यात्रा का। कल्याण बहुत दूर है। आपको आपके कल्याण की यात्रा की शुरुआत के लिए सबसे पहले ज्ञान और उस ज्ञान की सही समझ लेना जरूरी है। और वह ज्ञान और

उसकी सही समझ आपको किससे मिलेगी? हर कोई अपने से चेक करे। संगम युग में परमात्मा आकर हर किसी को अपनी सत्य पहचान देते हैं, ज्ञान के द्वारा। हर किसी को स्वयं की समझ देते हैं।

तो हर कोई आत्मा को सबसे पहले परमात्मा से जुड़ना आवश्यक है, अगर वह आत्मा अपना कल्याण करना चाहती हो तो। क्योंकि कल्याण करने वाला एक ही है – परमात्मा, जो सभी का कल्याण करने के लिए आए हैं। आप आपसे कभी भी पूर्ण रूप से आपका कल्याण नहीं कर सकते। परमात्मा ही ज्ञान देकर, समझ देकर, शक्ति देकर, आत्मा में ताकत भर कर कल्याण की यात्रा पूरी कराएगा। पर उसके पहले आत्माओं को क्या करना जरूरी है? कल्याण की यात्रा का अति महत्वपूर्ण पड़ाव है – समर्पण। जब परमात्मा संगम पर आते हैं, सभी का कल्याण करने के लिए तो सबसे पहले सभी अस्तित्वों का एक ही उद्देश्य सदैव होना चाहिए कि हमें परमात्मा के पास हमारा जो अस्तित्व है, वह संपूर्ण रूप से समर्पण करना है। क्योंकि आप जो हो वो आपके पिछले जन्मों की सारी संस्कारों रूपी आपके सभी प्रकार के अस्तित्वों की एक पर्सनालिटी है और संगम पर ही आप सत्य में आपके मूलस्वरूप में आ सकते हो। संगम युग ही एक ही ऐसा युग है जिस समय में आप आत्मा संपूर्ण रूप से शुद्ध हो सकती है। और संपूर्ण रूप से शुद्ध करने वाला कौन है? वह सिर्फ एक ही परमात्मा है।

अब तक सभी कल्पों में, सभी युगों में, सारे जन्मों में, संसार में आत्मा ने शरीर धारण करके पार्ट बजाया। पार्ट बजाते-बजाते अपने कर्म बंधन बनाए, कर्म संबंध बनाए और उसी अनुसार अगले जन्मों में भी हर कोई आत्मा ने अपने जीवन में कौन-कौन आएगा, किस-किस के साथ पार्ट बजाना होगा, वह अपने कर्मों से वह तय किया। पर अभी संगम युग में हर किसी का, हर प्रकार का कार्मिक अकाउंट सेटल होने का युग है, इसलिए अगर आत्मा अपना दिल से संपूर्ण रूप से कल्याण चाहती है, तो आत्मा को मायावी संसार का संपूर्ण रूप से त्याग करना ही होगा। क्योंकि आपके सभी संस्कार संसारी हैं, जो कि मायावी हैं क्योंकि संसार में कोई भी अस्तित्व अपने मूलस्वरूप स्थिति में नहीं है। कोई भी अस्तित्व हो जब तक वो अपने मूलस्वरूप स्थिति में, मूलस्वरूप अवस्था में नहीं आते, नहीं रहते, वह सभी मायावी ही अस्तित्व हैं। और संसार में सभी को अपनी स्थिति की संपूर्ण पहचान अब तक नहीं हुई है। इसलिए

इसे मायावी संसार कहा जाता है। पर आत्माओं को अपनी जिम्मेवारी लेनी होगी। मायावी संसार में रहके आपके मायावी अस्तित्व ही ज्यादा समय के लिए इमर्ज रहते हैं। क्योंकि संसार में आप मूलस्वरूप में ना रहते हुए, कर्म संबंध में, कर्म व्यवहार में आते हो और मूलस्वरूप में ना रहने के कारण, आपके हर एक कर्म व्यवहार से आपका और एक कार्मिक अकाउंट बनता जाता है।

इसलिए परमात्मा ने कहा है कि संगम युग है, सभी को अपना कल्याण करने का युग। इस ही युग में सभी आत्माओं को देह सहित, देह के सभी संबंधों को भूलना होगा। यह जो महावाक्य है, इसको हर कोई गहराई से, गंभीरता से, इस पर चिंतन अवश्य करे। आप जो भी अभी इस समय सुन रहे हो, फिर वो सम्मुख हो या दूर से हो, इस क्षण आप अगर वाणी सुन रहे हो, तो इस क्षण आपके मन में क्या चल रहा है, आपकी बुद्धि में क्या चल रहा है? क्या आपकी बुद्धि किसी और को याद कर रही है? हर कोई चेक करना। अगर बुद्धि बाहर कहीं भटक रही है माना आप मूलस्वरूप में नहीं सुन रहे हैं।

जब-जब आप मूलस्वरूप में नहीं रहते बुद्धि का भटकना स्वाभाविक है, मन का चंचलता का स्वभाव जागृत करना स्वाभाविक है। और यह बुद्धि कौन भटकाता है? यह मन को चंचलता कौन दिलाता है? यह वही आपका मायावी अस्तित्व है। आपकी आपके साथ ही सदैव लड़ाई चलती रहती है। आपकी लड़ाई बाहर कभी भी किसी के साथ नहीं चलती। आप आत्मा जो परेशान होती हैं, वह आप ही के मायावी अस्तित्व के कारण, उस मायावी संस्कार के कारण आप अशांत होते हो। इसलिए जितना-जितना आप आपके मूलस्वरूप में आते जाएंगे, उतने-उतने आपके कर्म बंधन, कर्म संबंध कटते जाएंगे और आप आत्मा आपकी कल्याण की यात्रा के लिए संपूर्ण रूप से मुक्त हो जाएगी; क्योंकि कल्याण तो शुरू हुआ ही नहीं है। अभी भी बंधनों के कारण आत्मा अटक चुकी है। जब सारे बंधन टूट जाएंगे - एक होता है स्थूलता में बंधनों का कटना, दूसरा होता है सूक्ष्मता में बुद्धि के द्वारा बंधनों का कटना।

हर कोई अपने से आज के दिन में चेक करे कि आप स्थूलता में कहाँ-कहाँ अटके हो और सूक्ष्मता में बुद्धि से आप कहाँ-कहाँ अटके हो? हर कोई अपने से आज के दिन में चेकिंग जरूर करे। और यह भी सच्ची दिल से पूछना अपने से कि क्या इन सभी स्थूल बंधनों को या सूक्ष्म बंधनों को मैं आत्मा काटना

चाहती हूँ? क्या सच में मुझे यह नहीं चाहिए? क्या सच में यह सारे बंधन मुझ आत्मा के हैं या मेरे मायावी अस्तित्व ने बांध के रखे हैं, पकड़ के रखे हैं? हर कोई आज के दिन में अपनी चेकिंग अवश्य करे। कोई-कोई कहते हैं, "हमें तो पुरुषार्थ करना अच्छा लगता है पर हमसे होता नहीं। हमें तो यह अभ्यास करना बहुत अच्छा लगता है पर आज हमसे यह नहीं हो पाया। हमें मौन अच्छा लगता है पर हमसे नहीं हो पाता।" तो जो कोई कह रहा है कि "हमसे यह नहीं हो पाता, हमसे यह नहीं होता", तो यह जो कहने वाला है, ये कौन है? क्योंकि आत्मा का आनंद है, आत्मा के पढ़ाई में है, आत्मा के अभ्यास में होता है। तो आपका कौन सा ऐसा मायावी अस्तित्व है, हर कोई चेक करे, जिसका पुरुषार्थ करने में मन नहीं लगता, आत्मिक स्थिति का अभ्यास करने में मन नहीं लगता, या कुछ आत्मा के कल्याण के संबंधित अभ्यास करने में उसके पास समय नहीं है? यह कौन है? हर कोई अपने अंदर के उस मायावी अस्तित्व को पहचानो, उसको ढूँढ कर निकालो क्योंकि यह मायावी अस्तित्व जब तक आप में रहेगा, तब तक आपकी कल्याण की यात्रा कभी भी शुरू नहीं होगी।

आपका मायावी अस्तित्व आप से चिपक कर बैठा है। इसलिए आप आत्मा को जोर लगाना पड़ेगा। जितनी-जितनी आप आत्मा की ताकत बढ़ती जाएगी, उतना-उतना वह मायावी अस्तित्व कमजोर होता जाएगा और आपको स्पष्ट रूप से दिखेगा कि आपके द्वारा, आप आत्मा ना चाहते हुए भी, आपके द्वारा किसने इस प्रकार से पार्ट बजाया? किसने आपके इस प्रकार के विपरीत संस्कारों को इमर्ज किया? अगर हर कोई सच्ची दिल से चाहता है कि उसको उसका कल्याण करना है, तो सबसे पहले आपनी मायावी अस्तित्व को पहचानो। पहचान कर उसको मुक्ति दो। जब तक आपको आपके अंदर के मायावी स्वरूप का पता नहीं चलेगा, तब तक आप कितनी भी आध्यात्मिक प्रैक्टिसेज करो, आत्मा के संबंधित कितने भी अभ्यास करो, आपकी सारी ऊर्जा वह मायावी अस्तित्व तत्क्षण समाप्त कर देगा।

अगर आपने एक घंटा आत्मिक स्थिति में रहकर सभी आत्मिक स्थिति का अभ्यास किया, संपूर्ण शांत स्वरूप रहकर, और उस एक घंटे के बाद कोई ऐसी परिस्थिति आई जिसमें आप आत्मा की स्थिति थोड़ी हिल गई, तो उसका रिजल्ट क्या हुआ? आपने जो एक घंटा आत्मिक स्थिति में बैठके आप आत्मा

को जो ताकत प्राप्त करनी थी, जो स्थिति प्राप्त करनी थी, वह एक घंटे की आपकी मेहनत, वह एक घंटे की आत्मिक स्थिति के अभ्यास से जो ऊर्जा उत्पन्न हुई, वह कुछ परिस्थिति वश होकर आपने स्थिति खोकर वह ऊर्जा वहाँ समाप्त कर दी। इसलिए आपको अति सजग होना पड़ेगा। आठ घंटा भी कोई अभ्यास करे और उसके बाद कोई कुछ सेकंड के लिए अपनी स्थिति को गंवाए, किसी भी कारण से— उदास होके, नाराज होके, डिस्टर्ब होके, किसी की किन्हीं बातों में आके — यह सब मायावी कारण हैं। अगर उस माया के प्रभाव में कोई आ गए, तो आठ घंटे की सारी आत्मा की कमाई की ऊर्जा आपने कुछ ही सेकंड में संपूर्ण रूप से व्यर्थ गवा दी। इसलिए संगम युग में बहुत धैर्यता से चलना होगा। डिस्टर्ब, उदास, नाराज करने वाला कोई और मायावी अस्तित्व होता है, किन्तु उसमें ऊर्जा आत्मा की पूर्ण रूप से खर्च होती है। फिर से आत्मा को ऊर्जा कमाने के लिए पुरुषार्थ में बैठना होगा, अपनी उस स्थिति को फिर से लाने के लिए अभ्यास करना होगा।

इसलिए अगर हर कर्म में हर कोई अपनी उस स्थिति का ध्यान दे, तो अपने आप हर कर्म में आपकी स्थिति सदैव अच्छी रहेगी। आपका काम है पूरे दिन भर में संपूर्ण रूप से स्थिति में रहना। फिर परिस्थिति आपको दिखे भी कि अभी अशांत करने वाली परिस्थिति सामने आने जा रही है, पर आप आत्मा को जब संपूर्ण रूप से यह स्मृति रहेगी कि यह परिस्थिति, परिस्थिति नहीं है, मुझ आत्मा की जो कमाई की हुई ऊर्जा है, वह ऊर्जा खाने के लिए आया हुआ कोई मायावी अस्तित्व है। फिर आपने किसी को क्रोध से कुछ कह दिया, रोब से कुछ कह दिया, या कमेंट्रियों द्वारा कुछ ऐसे कर्म किए, आप आत्मा की कमाई खाली हो गई। इसलिए हर कोई आत्मा को जो अपना दिल से कल्याण चाहती है उसे हर सेकंड अपनी स्थिति का ध्यान रखना होगा। वरना अंत में जब आपके हाथ में रिजल्ट आएगा, तब आप उस रिजल्ट को देखकर शॉक नहीं होना; क्योंकि कोई-कोई बच्चे कहेंगे, "हमने तो आठ घंटा याद की, हमारा तो पुरुषार्थ का चार्ट सदैव रेगुलर रहा, फिर भी, ऐसे कैसे रिजल्ट आया?" आपने सिर्फ आपने जो पुरुषार्थ किया, कमाई की उसको याद रखा, पर वह जो कमाई आपने की, आप आत्मा ने पुरुषार्थ करके, वह ऊर्जा क्या सच में आप आत्मा के कल्याण में लगी या कोई परिस्थिति वश होकर आपकी ऊर्जा

किसी ने समाप्त की? हर किसी का हर एक रिजल्ट अंत में सबके सामने होगा। इसलिए परमात्मा कहते हैं, सभी अपने कर्मों का सदैव ध्यान देना।

इसलिए जब-जब आप मूलस्वरूप में रहकर कर्म करेंगे, तब-तब आपको प्राप्ति सदैव होगी। हर कोई आत्मा अपनी इस कल्याण की यात्रा को देखे कि क्या सच में मेरी कल्याण की यात्रा शुरू हुई है या अभी भी हम सिर्फ ज्ञान ले रहे हैं, समझ ले रहे हैं? क्या कुछ भी हमने परिवर्तन की दिशा में अपने अंदर कुछ बदलाव किया है? या अभी भी हम जैसे संसार में चलते थे, जिस प्रकार से हमारा स्वभाव-संस्कार होता था, क्या अभी भी उस ही प्रकार का स्वभाव-संस्कार रहा है या कुछ अवस्था में परिवर्तन आया है? और संपूर्ण कल्याण और संपूर्ण परिवर्तन सिर्फ और सिर्फ और सिर्फ परमात्मा ही कर सकता है। पर वह भी कब होगा, जब आप आत्मा का संपूर्ण रूप से परमात्मा के पास समर्पण होगा; क्योंकि आप आत्मा के ऊपर जो आपके मायावी अस्तित्वों की अशुद्धि है, वह संपूर्ण रूप से शुद्धि सिर्फ परमात्मा ही कर सकते हैं। इसलिए परमात्मा जो-जो शिक्षाएं दे रहे हैं, उन सभी शिक्षाओं को आप आत्मा धारण करते जाना। संसार न कभी समाप्त हुआ है, न होगा, वह चलता ही रहेगा; पर आप आत्मा की कल्याण की यात्रा का क्या? आप आत्मा के मूलस्वरूप अवस्था का क्या? और क्या हर किसी को यह कन्फर्म है कि आप इस संगम युग में आपकी उस मूलस्वरूप यात्रा को पूर्ण रूप से पार कर पाओगे? इसलिए संगम युग में परमात्मा की श्रीमत, परमात्मा की हर आज्ञा, आत्मा को उसकी कल्याण यात्रा में मदद करती है। परमात्मा की हर आज्ञा में आत्मा का सिर्फ कल्याण ही छिपा हुआ है। इसलिए परमात्मा की हर श्रीमत में सदैव माना सदैव कल्याण ही होता रहता है।

यह एक ही संगम युग है जहाँ पर परमात्मा आते हैं सभी के कल्याण के लिए और सभी को वो कल्याण की समझ देने के लिए, ताकत देने के लिए। पर अगर इस संगम युग के चांस को किसी ने गंवाया, तो वह आत्मा का कभी भी पूर्ण रूप से कल्याण नहीं हो पाएगा; क्योंकि यह संगम अति माना अति मूल्यवान है, क्योंकि यहाँ पर स्वयं परमात्मा सभी के लिए, सभी के परिवर्तन के लिए आए हैं। इसलिए सभी आत्माएं अपने मायावी अस्तित्वों में रहकर गफलत नहीं करना, अपने समय को बर्बाद

नहीं करना; अन्यथा अंत में, सिर्फ पछतावा ही नहीं होगा, बल्कि सच में, सच में कोई-कोई बच्चे खून के आंसू रोएंगे। पर उस समय, समय नहीं होगा परिवर्तन करने के लिए। इसलिए सभी आत्माएं अपनी रिस्पॉन्सिबिलिटी लें, संसार के सभी प्रकार के मायावी स्वरूपों से अपना बचाव करें, अगर आप आत्मा सच में आपका कल्याण चाहती हो तो। हर कोई चेक करना—आप अभी भी कितने मायावी स्वरूप अस्तित्व में पूरे दिन भर चलते हो और अभी भी कितना समय आपके हर कर्मों में आप मूलस्वरूप अवस्था में रहते हो।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः

सभी जल्द से जल्द अपने मायावी अस्तित्वों का त्याग करें। उन सभी मायावी अस्तित्वों को मुक्ति दें, जो-जो आपके संस्कारों में पड़े हैं।